वर्ष 22 अंक 07
27 सितम्बर 2024
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 30 सितम्बर 2024

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-24
पृष्ठ संख्या 28
एक प्रति 20.00 रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

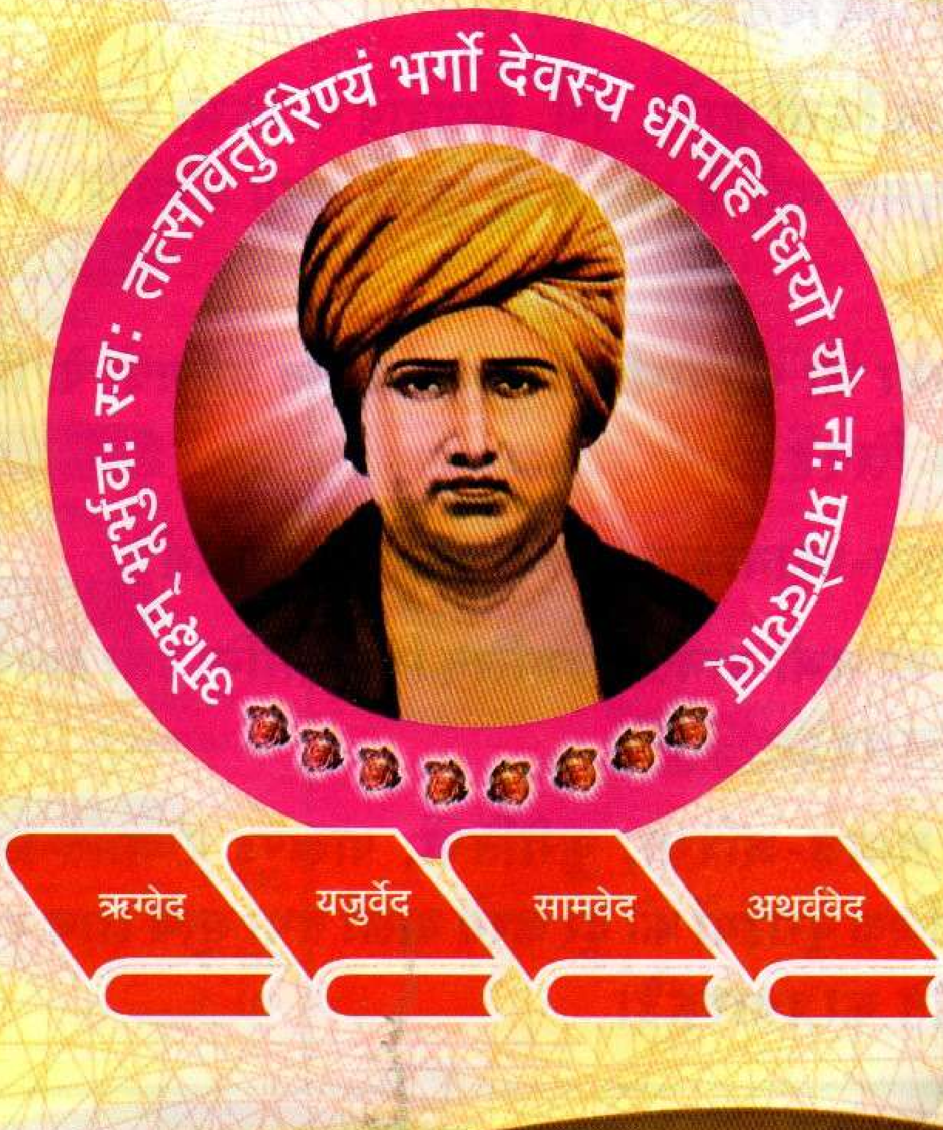

❋ एक दृष्टि में आर्य समाज ❋

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

॥ ओ३म्॥

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 22 अंक 09

सितम्बर - 2024

(सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,123

विक्रम संवत् 2081

दयानन्दाब्द 199

सलाहकार मण्डल

श्री ललित नागर

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री प्रकाश आर्य

कार्यालय फोन : 0755-4220549

सम्पादक

अतुल वर्मा

फोन : 07324-226566

सह सम्पादक

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता

एक प्रति .... ₹ 20,00

वार्षिक .... ₹ 300,00

आजीवन .... ₹ 2000,00

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 .... ₹ 500

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) .... ₹ 400

आधा पृष्ठ (अन्दर का) .... ₹ 250

चौथाई पृष्ठ .... ₹ 150

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय 04
- स्वामी दयानन्द 06
- महर्षि दयानन्द सरस्वती 07
- राष्ट्रभाषा हिन्दी के संघर्ष भरे 75 वर्ष 10
- श्रीयुत् स्वामी रामभद्राचार्य जी का अज्ञान 14
- सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम् 20
- सकारात्मक दृष्टिकोण से देखो 21
- समाचार 22

सम्पादकीय :

अनियंत्रित दिशा और दशा

आज के पहले नियन्त्रण शब्द की गंभीरता पर कभी गहराई से विचार नहीं किया था। न जाने कैसे इस पर वैचारिक सूई आकर ठहर गई और वैचारिक मंथन प्रारंभ हो गया।

सोचने पर पर लगा यह एक शब्द ही इतना बड़ा कारण है जिसके आस पास सारी दुनिया है और सारी दुनिया इससे प्रभावित हो रही है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता ह यह सार्वभौमिक है, सार्वकालिक है, सदा के लिए है, सबसे के लिये है।

इसकी प्रासंगिकता व्यक्ति से लेकर विश्व तक है, छोटे से निर्माण से लेकर जल, थल, नभ तक है।

नियन्त्रित प्रत्येक वस्तु प्रत्येक विचार, प्रत्येक व्यक्ति लाभप्रद होता है। अनियन्त्रित कोई भी बात कोई भी कार्य, कोई भी वस्तु हानिकारक होती है। आज चहुंओर अनियन्त्रित दृश्य व परिवेश दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

नियन्त्रण का भाव – संयम से समझ सकते हैं संयम और सरल करें तो उसे सीमा या मर्यादा से समझा जा सकता है। अब इस लेख का लिखने का उद्देश्य पाठकवृन्द के समक्ष कुछ स्पष्ट हो चुका है ऐसा मैं मानता हूँ।

संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिये नियन्त्रण का कितना महत्व है, इस पर थोड़ा विचार करते हैं। जीवन का एक महत्वपूर्ण सूत्र जो आपकी जिन्दगी आबाद कर सकता है और उसकी उपेक्षा से बरबाद हो सकता है वह शब्द है नियन्त्रण। एक व्यवहार आपको सुख, शान्ति, आनन्द की अनुभूति दे सकता है वही न होने पर आपके दुःख अशान्ति का कारण भी बन सकता है।

जैसे बहुत आरामदायक सर्व सुविधा युक्त बहुत तेज गति वाला वाहन आपकी यात्रा सफल बनाते हुए समय की बचत और शारीरिक सुख प्रदान कर सकता है। किन्तु यह तभी संभव है जब उस पर नियन्त्रण करने की कोई व्यवस्था हो। यदि वाहन नियन्त्रण में चलता रहे तो उसका लाभ है अनियन्त्रित वाहन जीवन भी नष्ट कर सकता है। कितना भी कीमती वाहन हो उसका महत्व गति पर नियन्त्रण व्यवस्था से ही है।

समुद्र जीवन दाता है, बादलों को पानी देता है, बादल वर्षा कर प्राणीमात्र को जीवन देता है। पानी से ही वन, वनस्पति, अन्न सबकुछ है इसलिये समुद्र प्राण का बड़ा आधार है। अनेक व्यक्ति समुद्र की इसी महानता के कारण उसकी पूजा करते हैं, हाथ जोड़ते हैं, उसके प्रति पवित्र आदरभाव रखते हैं।

समुद्र में अथाह जल है परन्तु नियन्त्रित है। अनेक शहर समुद्र के मध्य बसे हुए है किन्तु समुद्र से कोई खतरा उन्हें नहीं होता। किन्तु वही समुद्र अनियन्त्रित हो जाता है तो सुनामी का रूप लेकर काल बनकर सबकुछ तबाह कर देता है तब उसके भाव ही बदल जाते हैं।

अग्नि जीवन है बिना अग्नि के जीवन व जीवन की आवश्यकताओं की कल्पना भी करना व्यर्थ है। प्रत्येक प्राणी के भीतर अग्नि तत्व है कम हो जावे तोऔर बढ़ जावे तो वह हानिकारक है। नियन्त्रित तत्व ही जीवन रक्षक व लाभदायक है। नियन्त्रित अग्नि से हवन होता है, भोजन बनता है, वस्तुओं का निर्माण होता है किन्तु वही अग्नि अनियन्त्रित होकर भयंकर आग के रूप में परिवर्तित हो जावे तो चारों ओर तबाही मचा देती है। प्राणीमात्र का नदियां जीवन है। परन्तु अनियन्त्रित हो जाने पर भयंकर बाढ़ का रूप धारण कर लेती है लाखों व्यक्ति बेघर बार हो जाते हैं, पानी में बहकर उनका जीवन अन्त हो जाता है।

इसी प्रकार यह मनुष्य जीवन भी, इसे यदि नियन्त्रित रखा तो यह अनेक आपदाओं से, परेशानियों से, क्लेशों से, भय से, शारीरिक व मानसिक बीमारियों से मुक्त रहेगा।

हमारे शास्त्रों में विद्वान, पूर्वजों ने इन सब पर गहन विचार उपदेश के रूप में हमें दिये हैं।

किन्तु समाज आज उनकी उपेक्षा कर सारी सीमायें तोड़ते हुए अनियन्त्रित हो रहा है। हम क्या खाते हैं, कितना खाते हैं, कब खाते हैं इसकी कोई सीमा नहीं। इसका प्रयास 'तीज टउक्ष+ जीवन नियन्त्रित रहे।

धन सम्पत्ती एकत्रित करने की कोई सीमा नहीं। फिर इसके लिये जो प्रयास होगा ब्हहव सोने, जागने, खाने पीने की सब स्थिति अनियन्त्रित हो जावेगी।

परिणाम कि चिन्ता बिना पूरी दिनचर्या अस्त व्यस्त हो जावेगी।

इसलिये, उपदेश दिया अदरिग्रह का, इसलिए उपदेश दिया सन्तोष धन का इसीलिए उपदेश दिया जितेन्द्रिय बनने का, अनियन्त्रित जीवन बन्धनों में उलझा देता है वहीं नियन्त्रित, संयमित जीवन सुगमता, सरलता, सफलता प्रदान करता है।

किसी ने ठीक लिखा – हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें। दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।

ये मन बड़ा चंचल है, जीवन को यही नियन्त्रित या अनियन्त्रित करता है। कठोपनिषद में इसे –**''आत्मानां रथिनं विद्धि शरीर रथ मेवतू, बुद्धितू सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहं मेवच।।''**

अर्थात् – आत्मा यात्री, शरीर वाहन, बुद्धि चालक और मन नियन्त्रण करने वाली लगाम है।

इस मन को नियन्त्रित कर लिया तो जीवन मुक्ति और नहीं किया तो बन्धन में डाल देगा।

योगीराज श्री कृष्णजी के अनुसार –**मनएव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो।**

इसलिए अनियन्त्रित विचार, इच्छायें, सृग्रह प्रवृत्ती से आज व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व दुःख, चिन्ता, भय की आग में जल रहा है।

नियन्त्रण ही सामाजिक संविधान है, नियन्त्रण ही धर्म का सन्देश है।

स्वामी दयानन्द

धर्म : जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरिक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसे धर्म कहते हैं।

स्वर्ग : जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह स्वर्ग कहलाता है।

नरक : जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह नरक कहलाता है।

अभयं मित्रादभयममित्रादमयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

अर्थात् : हे सर्व भयहर्ता परमात्मन्। मित्र से हमें अभय (अर्थात् भय से अन्य फल) शत्रु से अभय ज्ञात शत्रु तथा अज्ञात् शत्रु से अभय हो, रात्रि तथा दिन में अभय हो। सब दिशाएँ हमारे लिये हितकारिणी होवें।

सद्गुणों की महत्ता

गुणैरूत्तमतां यान्ति नोच्चैरासन संस्थितैः।

प्रसाद शिखरस्थोपि काकः किं गरूड़ायते।। चाणक्य नीति

अर्थात् : गुणों से ही मानव महान होता है, न कि ऊँचे आसन पर बैठने से। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं हो सकता।

अद्यैव कुरू यच्छेयो मा त्वां कालोऽत्यगादयम्।

न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।

महाभारत शांतिपर्व 164–14

भावार्थ : जो उत्तम कार्य करना हो, वह आज ही कर डालो कहीं ऐसा न हो कि काल तुम्हें निगल जाय। मृत्यु इस बात की प्रतिक्षा नहीं करती कि तुमने कोई कार्य पूरा किया है या नहीं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रकाश आर्य, महू

भारत भूमि प्राकृतिक सम्पदा सम्पन्न, महापुरूषों से गौरवान्वित और वर्तमान संसार की प्रथम संस्कृति से जुड़ी हुई है।

यहां जन्में अनेक महापुरूषों के ज्ञान का प्रकाश संसार में फैला और आज भी फैलता जा रहा है। यह ज्ञान चाहे आध्यात्म के रूप में, दर्शन के रूप में या अन्य सामाजिक कार्यों के कारण हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की गणना भी एक महान विद्वान, समाज सुधारक एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रणेता के रूप में की जाती है। यद्यपि आज बहुत से व्यक्ति महर्षि की जीवनगाथा से अनभिज्ञ हैं कई तो स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द को एक ही मान बैठते हैं।

महर्षि का जीवन चरित्र पढ़ने पर पता लगता है कि इस महान विभूति न किस प्रकार के कार्य किये।

वेद, जिन्हें धर्म गुरूओं ने विद्वानों ने धर्म का आधार माना था उसे यह समाज भूल चुका था। तरह–तरह की कपोल कल्पित गाथाएं जोड़ दी गई थी और उन्हें लुप्त होना बताया। पाताल में उन्हें जाना बता दिया था। कुछ विदेशी इन वेदों को गड़रियों के गीत के समान उपमा देते थे। किन्तु आदि शंकराचार्य के पश्चात एकमात्र स्वामी दयानन्द ने पुरूषार्थ कर वेदों के महत्व को समाज के समक्ष रखा। वेदों का महत्व समझाते हुए परमात्मा के इस ज्ञान की पूर्णता, सार्थकता और सत्यता पर गिरा हुआ परदा हटाकर भटकी हुई संस्कृति को पुनः सत्य पथ का दर्शन करा दिया।

संसार के महापुरूषों ने किसी असत्य मान्यता का पाखण्ड का, सामाजिक बुराईयों का खुलकर विरोध नहीं किया वे अपनी बात कहते गये, जमाना सुनता गया। इस कारण समाज में उनका विरोध नहीं हुआ। किन्तु महर्षि का विचार अपना था। वे मानते थे जब तक गलती का एहसास नहीं होगा उन्हें उससे हटाया नहीं जावेगा। तब तक सत्य काअसर होना संभव नहीं है। जैसे किसी पुराने खण्डहर के मस्थान पर नया भवन बनाना हो तो पहले की बेकार सामग्री हटाना पड़ेगी तभी नए भवन का निर्माण संभव है। इस कारण महर्षि ने समाज में व्याप्त पाखण्ड, सामाजिक बुराईयों का खण्डन किया और उन्हें सनातन धर्म की मान्यता के विरूद्ध बताया। इस कारण ऐसे अनेक व्यक्ति जो इन बुराईयों में लिप्त थे, पाखण्ड फैलाकर अपने स्वार्थ सिद्धी करने में लगे थे वे स्वामी दयानन्द के विरोधी हो गए अनेक बार उनकी अव्हेलना और अपमान किया और प्राणघातक हमले तक किये।

किन्तु सत्य का दिवाना ईश्वर सन्देश फैलाने की धुन में व्यस्त समाज सुधार की धुन का पक्का, फक्कड़ वीर सन्यासी इन प्रहारों से रूका नहीं, हटा नहीं, घबराया नहीं वरन् उसके कार्य में और तेजी तथा दृढ़ता नित्य बढ़ती गई और आज जमाना उन सब कार्यों को मानता है कर रहा है, जिसके लिये महर्षि ने शंखनाद किया था। संक्षेप में एक नजर उन कार्यों पर डालें जो महर्षि ने प्रारंभ किये थे।

बाल विवाह गलत है, सतिप्रथा गलत है, जन्म से नहीं अपितुं कर्म से वर्ण या जाति को मानना चाहिए, छुआछूत एक अपराध है, विद्या प्राप्त करना सबका अधिकार है, बलि प्रथा अधर्म है, जीवित माता–पिता की सेवा, सन्तुष्टि ही सच्चा श्राद्ध है, तर्पण है, स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है। परमात्मा एक है, सबकुछ परमात्मा की कृपा से प्राप्त है, परमात्मा ही सर्वोपरि है। निरंकार है, अजन्मा है, सर्वव्यापक है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए आदि अनेक विचार महर्षि ने समाज को दिए, जिनमें अधिकांश पर आज कानून बन गया।

समाज सुधार के कार्यों के साथ–साथ महर्षि ने आध्यात्म के मूल से समाज को जोड़ने का प्रयास किया। देश के अनेक राजा उनके शिष्य थे, जिन्हें महर्षि ने धर्म शिक्षा प्रदान की। महर्षि का यह विचार था कि यदि राजा सुधर जावे तो उसका प्रभाव प्रजा पर अवश्य होगा।

दुनिया ने कहा आगे बढ़ो परन्तु महर्षि दयानन्द का नारा था **''वेदों की ओर लोटो''**

महर्षि का ही सद्प्रयास कहा जायेगा जिसके कारण आज गायत्री मन्त्र, यज्ञ, यज्ञोपवीत व वेद पाठ जन साधारण द्वारा अपनाने के लिये हो गए अन्यथा केवल जाति विशेष परिवार में जन्म लेने वालों को ही इन्हें अपनाने का एकधिकार था। महिलाओं को वेद पढ़ने व शिक्षा पर तो बहुत बड़ी पाबन्दी थी किन्तु महर्षि के प्रयास से इन अज्ञानमयी मान्यता का अन्त हुआ और संसार में पहला कन्या गुरूकुल व पहली कन्या पाठशाला महर्षि के अनुयायी आर्य समाज के समर्थकों ने प्रारंभ की। आज संसार में अनेक देशों में वेद पाठी विद्वान जाकर सनातन धर्म प्रचार कर रहे हैं। यह महर्षि की ही कृपा है।

महर्षि के ही प्रयास का परिणाम है नारी जाति को शिक्षा के प्रति सहयोग प्रोत्साहन आज नारी शक्ति समाज, आध्यात्म व राजनीति के क्षेत्र में शीर्ष स्थानों पर पहुंच रही है।

भारत की स्वतन्त्रता में महर्षि का अद्भुत अनूठा योगदान है। मंगल पाण्डे की योजना से जब ब्रिटिश साम्राज्य 1957 की क्रान्ति से घबराया तो उसने बड़ी समझदारी से भारतीय अंग्रेज हुकुमत के लिये मानसिक रूप से सौहार्दता व सहयोग का वातावरण निर्मित करने की चाल चली।

ब्रिटिश गव्हरमेंट द्वारा एक फरमान जारी किया गया कि हमने अपने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को यह आदेश जारी कर दिये हैं कि किसी भी भारतीय को उसके धार्मिक कार्यक्रमों में सामाजिक कार्यक्रमों में कोई रूकावट न डालें। जो ऐसा करेगा वह अधिकारी दंडित किया जावेगा। आगे कहा आप सब भारतीय अपने–अपने कार्यों के लिये स्वतन्त्र हैं।

हमें तो परमात्मा ने इस देश की सुख शान्ति व समृद्धता के लिये भेजा है। कुछ दिनों में हम यहां सुख शान्ति का वातावरण निर्मित करेगें प्रत्येक को आर्थिक रूप से सम्पन्न कर देगें आप हमारा सहयोग करें।

इस घोषणा से भारतीय अंग्रेजों के प्रति सद्भावना रखने लगे, भारतीयों की स्वतन्त्रता की भावना को ठण्डा करने में अंग्रेल सफल होते दिखने लगे।

तभी महर्षि ने यह सन्देश दिया विदेशी राजा कितना भी कृपा करने वाला क्यों न हो पर स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता।

महर्षि के अंग्रेजी हुकूमत में ऐसे प्रचार से जो एक बड़ी हिम्मत का कार्य था। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने देहली की आम सभा में महर्षि के इस शौर्यपूर्ण कार्य की प्रशंसा की तथा स्वराज्य की ऐसी पहली घोषणा बताया।

महर्षि को अंग्रेज बागी फकीर के रूप में पुकारते थे। महर्षि ने स्वराज्य के लिये सन् 1960 में लगभग प्रयास तेजी से प्रारंभ किये। तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई भी महर्षि के सम्पर्क में आये। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, काकोरी काण्ड के प्रमुख पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, मदनलाल ढ़ींगरा, वीर सावरकर महान के गुरू पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक क्रान्तिकारी व स्वतन्त्रता संग्राम के नेता महर्षि के विचारों से प्रभावित हुए और माँ भारती की आजादी में बलिदानी इतिहास के नायक बने।

इसीलिए तो डॉ. पटटाभिसीतारमैया ने कांग्रेस का इतिहास लिखते समय लिखा देश की आजादी में बहुत बड़ा भाग आर्य समाज के अनुयायियों का है।

महर्षि का कार्य समाज के लिए प्राणीमात्र के लिये सत्य सनातन धर्म के लिये व राष्ट्र के लिये था। इसका विरोध खूब हुआ। 16 बार जहर पान करना पड़ा और अन्त में दुष्टों की योजना से जहरपान से रूग्ण अवस्था में जीवन मृत्यु से जूझते हुए दीपावली अमावस्या की काली रात्रि में देहत्याग कर अमरत्व को प्राप्त किया।

ऐसे निष्काम कर्मयोगी को बार–बार नमन्। उनके चरणों में पुष्पांजलि अर्पित।

उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया
जिनके खूं से जले चिरागे वतन।
आज जगमगाते मकबरे उनके
जिन्होंने बेचे थे शहीदे कफन।।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के संघर्ष भरे 75 वर्ष

14 सितम्बर राष्ट्रीय हिन्दी दिवस पर विशेष

हिन्दी राष्ट्रीय एकता का माध्यम हैं। देश के विभिन्न मत मतान्तर को छोड़ सभी राजनीतिज्ञों ने इसे स्वीकार किया हैं। हिन्दी के माध्यम सारा देश जुड़ा हैं। हिन्दी सन्तो की, व्यवस्था की, ज्ञान–विज्ञान की भाषा रही हैं। हिन्दी देश के कण कण और प्रत्येक अवयव में रची बसी हैं। साहित्य संस्कृति के तथ्य को उजागर करने की भाषा रही हैं। हिन्दी जन आन्दोलन की भाषा रही हैं। हिन्दी ने देश को स्वतंत्र कराया। महात्मा गांधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा की मान्यता दी और सारे भारतवर्ष में इसके प्रचार और प्रसार को समर्थन किया। दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार इसी मन्तव्य को सफल बनाने के लिये किया गया। गांधीजी की प्रेरणा से 1920 में हिन्दी प्रचार हेतु कई संस्थाए स्थापित हुई। जिसकी शाखाएँ आज भी भारत में कार्यरत है और हिन्दी को लब्ध प्रतिष्ठित कराने व हिन्दी की महत्ता प्रतिपादित करने का प्रचार प्रसार कर काले अंग्रेजों के मानस को मांजने का कार्य सम्पादित कर रही हैं।

ज्ञातव्य हो जब भाषा ह्रदय की अनुभूति और विवेकजन्य चिन्तन को आत्मसात करती है तभी वह वाणी बनकर अभिव्यक्त होती हैं। हिन्दी संस्कृत की देवनागरी लिपि को ही नहीं बल्कि आचरण और प्रकृति को भी अपने में समाहित करने में सक्षम रही हैं। प्रान्तीय भाषा–भाषियों ने हिन्दी भाषा को अपने व्यवहार और आचरण में शताब्दियों पहले से उतारना शुरू किया। इसलिए हिन्दी सर्वजन प्रिय भाषा बन गई, परिणाममतः संविधान में हिन्दी को स्थान मिला तथा हिन्दी को हमारे संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान के 343 वें अनुच्छेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि संध की राजभाषा हिन्दी देवनागरी होगी। हमारे संविधान निर्माताओं ने बड़ी सुझबुझ के साथ हिन्दी को राज भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का निर्णय लिया हैं। वैसे हमारे देश में कई विकसित भाषाएं हिन्दी से भी प्राचीन है और समृद्ध हैं। किन्तु वे अपने एक सीमित क्षेत्र में ही समझी और बोली जाती हैं।

हिन्दी को राजभाषा का स्थान इसकी व्यापकता और सरलता के कारण ही दिया गया था, क्योकि यही देश की ऐसी भाषा है जो भारत के अधिकांश क्षेत्रों में अधिकत्तर लोगों द्वारा बोली और समझी जाती हैं। हिन्दी को जब यह स्थान दिया गया

जब उनसे यह अपेक्षा की गई थी कि वह सारे देश को एकता के सूत्र में बाधने और शासन को जन जन तक पहुंचाने के कार्य में सहायक होगी।

भारत के बहुभाषी देश होने के नाते साथ ही विभिन्न संस्कृतियों, रीति–रिवाजों और धार्मिक मान्यताओं का देश हैं। इसलिए इस देश की केन्द्रीय भाषा में इस देश की मूलभूत विशेषताएँ भी प्रतिबिंबित होना चाहिये। हमारे संविधान के अनुच्छेद 356 में इन बातों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी भाषा के विकास के लिए स्पष्ट निर्देश दिए गए थे कि संध का कर्तव्य होगा किवह हिन्दी भाषा का प्रचार बढ़ाए, उसका विकास करें जिससे वह भारत की सामासिक, सांस्कृतिक के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप शैली और पदों को आत्मसाद करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

यहाँ यह स्पष्ट है कि इस भाषा के विकास के लिए भारतीय भाषाओं और संस्कृत से शब्द ग्रहण करने का अनुदेश हैं। किन्तु साथ ही हिन्दुस्तानी का भी उल्लेख हैं। यह भाषा सभी के मेल जोल से विकसित हुई हैं। हिन्दी के विकास में आरम्भिक काल से ही हिन्दुओं के साथ साथ मुसलमानों का ही उतना ही योगदान रहा हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और चिन्तक डॉ. रामधारीसिंह दिनकर के अनुसार हिन्दी साहित्य केवल हिन्दी कवियों का ही निर्माण नहीं है उसकी शक्ति और शोभा मुसलमानों ने भी बढ़ाई हैं। अमीर खूसरों, कबीर, जायसी, उसमान, रहीम, और रसखान, अनीस एहमद और कमाल, ताज और तानसेन, रसलीन ये सब मुसलमान थे और उनमें से अधिकांश तो हिन्दी के अत्यन्त उच्च कोटि के कवि हुए हैं। हिन्दी की परम्परा साम्प्रदायिकता की परम्परा नहीं, एकता, उदारता, सामाजिक समानता और वैयक्तिक स्वातन्त्रय की परम्परा हैं।

मै ऐसा मानता हूं कि हिन्दी केवल साहित्य की अथवा राजकाज की भाषा नहीं है बल्कि हिन्दी राष्ट्रीयता और अस्मिता का प्रतिक हैं। इसका स्वरूप पिछले दिनों राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय साबित हो चुका है। जो हमारे लिए बड़ी हर्षता की बात हैं। आज दुनिया के 105 ऐसे देश है जहां किसी न किसी रूप में इसका व्यवहार होता है और विश्व के 163 विश्वविद्यालयों में किसी न किसी रूप में इसकी पढ़ाई होती है भारत में इसके बोलने समझने वालों की संख्या करीब 10 करोड़ से ज्यादा ही है कम नहीं।

यह राष्ट्र की एकता को अक्षुण्य बनाती हैं।

हमारा राष्ट्र गांधी जी एवं शास्त्रीजी की 154 वीं जयन्ती मना चुका है वही 1997 में आजादी की 50 वीं वर्षगाठ स्वर्ण जयन्ती के रूप में मना चुका है और अब भारत हीरक जयन्ती वर्ष के साथ संविधान द्वारा हिन्दी भाषा को संध की राजभाषा धोषित 14 सितम्बर 1941 करने के आधार पर यह सत्र राजभाषा हिन्दी का हीरक जयन्ती वर्ष हैं। अतः ऐसे समय में अंग्रेजी को बिल्कुल विदा कर भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान देते हुए हिन्दी को पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित करना हमारा, हमारी सरकार का, राष्ट्रवासियों का कर्तव्य और दायित्व बनता हैं।

यह प्रश्न इसलिए कि उसी अनुच्छेद में आगे लिखा हुआ सन् 1965 के बाद भी अंग्रेजी को चालू रखने के लिए संसद कानून बना सकती हैं। 14 सितम्बर 1941 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया। 26 जनवरी 1950 से संविधान के तहत इसे लागू भी कर दिया गया। इसके पहले जब 19 अप्रैल 1947 को बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने कहा था कि हिन्दुस्तानी को न केवल संध की वरन सभी इकाइयों की भाषा बना दिया जाना चाहिए। उनका कहना था यथास्थिति धारा9 हिन्दुस्तानी को संध की राजभाषा घोषित करती हैं। समिति द्वारा गृहित शब्दावली के विचार से यह स्पष्ट है कि हिन्दुस्तानी राज्य की अर्थात संध की भाषा होगी और साथ ही इकाइयों की भी। यदि प्रत्येक इकाईको स्वतंत्रता दी जाती है, जैसी कि अन्य धारा में दी गई है कि वह किसी भी भाषा को राजभाषा बनाए तो इससे न केवल भारत के लिए एक राष्ट्रभाषा का उद्देश्य पराभूत हो जायेगा वरन् भाषाई विभेदता के कारण भारत का प्रशासन भी असंभव हो जायेगा। अतः मेरा अभिमत है कि संध के स्थान पर राज्य शब्द रख दिया जाए। हो सकता है इकाइयां हिन्दुस्तानी को अपनी राजभाषा बनाने के लिए समय मांगे। इसके लिए उन्हे समय देने में कोई हानि नहीं हैं। किन्तु इस विषय पर कोई सन्देह नहीं हो सकता है कि प्रारम्भ से ही इकाइयों पर हिन्दूस्तानी को ग्रहण करने की वैधानिक अनिवार्यता या बाध्यता होगी।

सन् 1931 की जनगणना के अनुसार देश की आबादी का 65.प्रतिशत भाग हिन्दी बोलता व समझता था इसलिए गांधी जी का जोर था कि हिन्दी और उर्दू के मेल से पनपी हिन्दुस्तानी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो तथा आजाद भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी अथवा हिन्दी होगी। 1936 में कांग्रेस ने गांधीजी की प्रेरणा से यह प्रस्ताव पारित किया था कि कांग्रेस के अधिवेशन की कार्यवाही हिन्दुस्तानी अथवा हिन्दी में ही सम्पन्न हो निश्चित ही आजादी के पूर्व राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार प्रसार

राष्ट्रीयता का द्योतक था। उस समय कल्पना भी नहीं की थी कि अंग्रेज चले जायेंगे और अंग्रेजी रह जायेगी।

दुर्भाग्य भारत का हिन्दी का राजनीतिक उठापटक वामपंथी तथा आजादी के बाद 5 केन्द्रीय शिक्ष ामंत्री मौलाना आजाद, हुमायू कबीर, मो. करीम चागला, फकरूद्दीन अली अहमद व नजुल हसन रहे। जिन्होंने हिन्दी के प्रति उदासीनता का ही भाव रखा हैं। इन्होंने बाबर, हुमायूँ, जहांगीर, औरंगजेब याने इस्लाम संबंधी पाठ्क्रम ही परोसा। जिसके कारण हिन्दी की उन्नति की जगह अवनति ही हुई हैं। 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित हुआ लेकिन 13 वर्षो में एक नियम नहीं बना सके। यह हास्यास्पद से अधिक दुखद और दुखद से बढ़कर शर्मनाक बात है कि राजभाषा हिन्दी के प्रति आपने कभी न तो मुस्तैदी बरती और न ही ईमानदारी। 1976 में राजभाषा नियम बनें। इस भांति राजसिंहासन पर बैठने का जिस भाषा को 1991 में संवैधानिक अधिकार मिला वह फुटपाथ पर खड़ी रही और आज वर्तमान में हमसे हिन्दी कुछ प्रश्न पूछ रही है कि क्यों केन्द्र सरकार व राज्य सरकार में 60 से 80 प्रतिशत कार्य अंग्रेजी में होते है ?

आज केन्द्र व राज्य सरकारों में शायद ही कोई ऐसा पद हो जिसमें बिना अंग्रेजी जाने किसी को सेवा का अवसर मिला हो। यह राजभाषा अधिनियम 1963 का खुल्लामखुल्ला उल्लंघन हैं। वहीं दूसरी ओर धारा 3 जिसके अन्तर्गत हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का ज्ञान आवश्यक है उसकी भी ऐसी की तैसी हो रही है। वर्तमान में मोदी सरकार के चलते राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थिति सुधरी हैं। जनमानस को भी हिन्दी के प्रति लगाव व प्रयोग हेतु अपनी सन्तानों को भी कान्वेन्टिया रोग से बचाना होगा। तब कही जाकर हिन्दी की स्थिति सुदृढ़ होगी।

अन्त में विस्तार भय को देखते हुए लेखनी को समापन की ओर मोड़ते हुए इतना ही निवेदन करूंगा कि आपके मन में कोई झंझावात हिन्दी को लेकर पैदा हुआ हो तो मेरी लेखनी धन्य हो जायगी अन्यथा मन में वेदना होगी कि काले अंग्रेजों के हृदय चेतना शून्य हो गये हैं। शिक्षा संस्कृति और संस्कार तीनों को हमने कही गिरवी रख दिया है तथा अंग्रेजी के व्यामोह में हमने इस देश की अस्मिता से सौदा हो गया हो, यह रूप देखकर शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दो के बजाए अंग्रेजी स्कूलों की आई बाढ़ आगे क्या परिचय देगी। इस पर हम चिन्तन करें। जय हिन्दी जय नागरी।

डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी

नागदा

साभार सत्यार्थ सौरभ

श्रीयुत् स्वामी रामभद्राचार्य जी का अज्ञान

अनेक लोगों को हम भ्रम रहता है कि महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज श्रीराम और श्री कृष्ण को नहीं मानते। अनेकों पौराणित भाइयों का यही मत रहा हैं परन्तु यह बात पूर्णतः असत्य हैं। अभी ताजा प्रकरण में स्वामी रामभद्राचार्य जी ने एक अवसर पर यह बात कही कि **स्वामी दयानन्द जी की यह भूल थी कि उन्होंने रामायण और महाभारत को काल्पनिक माना।** उनका यह कहना यह द्योतित करता है कि उन्होंने महर्षि दयानन्द को जाना ही नहीं उनके किसी ग्रन्थ को विशेष रूप से सत्यार्थ प्रकाश को भी नहीं पढ़ा। जो दयानन्द भारत के प्राचीन गौरव के सर्वाधिक प्रखर गायक हैं वे श्रीराम और श्रीकृष्ण को काल्पनिक कैसे मान सकते है ? ये दोनों महापुरूष तो वेद की ऋचाओं के मूर्त रूप हैं। वेद का समस्त उदात्त उपदेश इनके जीवन में चरितार्थ हैं। आर्य समाज श्रीराम एवं श्रीकृष्ण को ऐतिहासिक, वास्तविक एवं आदर्श पुरूष ठीक उसी प्रकार मानता है जैसे वाल्मीकि महर्षि ने श्रीराम को माना हैं। वे नारद से यहीपूछते है –

हे मुने ! इस समय संसार में गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यवक्ता और दृढ़प्रतिज्ञ कौन है ? सदाचार से युक्त समस्त प्राणियों का हितसाधक विद्वान, सामर्थ्यशाली और एकमात्र प्रियदर्शन पुरूष कौन है ? मन पर अधिकार रखने वाला, क्रोध को जीतने वाला, कान्तिमान और किसी की भी निदा नहीं करने वाला कौन है ? तथा संग्राम में कुपित होने पर किससे देवता भी डरते है ? (वाल्मीकी रामायण–प्रथम सर्ग) और महर्षि नारद द्वारा इसके प्रत्युत्तर में एक ही नाम मिलता है वह है– श्रीराम

इन्ही श्रीराम को महर्षि दयानन्द आदर्श उदात्त चरित्र का स्वामी मानते हैं। रामायण इन्हीं मर्यादा पुरूषोत्तम के व्यक्त्वि व कृतित्व की गौरवगाथा हैं। राम का ठीक यही स्वरूप महर्षि दयानन्द को स्वीकार्य हैं।

श्रीरामभद्राचार्य जी तथा उनके जैसे सभी आचार्यो के और आर्य समाज के, श्रीराम को मानने में मूलभूत अन्तर है कि वे राम के चित्र की पूजा करते है **जबकि आर्यसमाज राम के चरित्र का उपासक है वे रामायण पाठ मोक्ष का साधन समझते है जबकि आर्य समाज उन गुणों को जीवन में धारण करने में ही जीवन की धन्यता का अनुभव करता हैं।** पौराणिक बन्धु रामायण पाठ से पाप–ताप का निवारण मानते है जबकि आर्य समाज श्रीराम के जीवन में उपस्थित गुणों को जिनका प्रकाशन रामायण पाठ से होता है, जीवन में धारण करने से पाप ताप के निवारण की संभाव्यता को देखता हैं।

वाल्मीकी रामायण में बाल काण्ड–प्रथम सर्ग से पूर्व पाँच अध्यायों में यह बताया गया है कि रामायण पढ़ने से क्या लाभ होता हैं। हम नहीं कह सकते कि ये अध्याय

वाल्मीकी महर्षि द्वारा लिखे गए अथवा किसी अन्य द्वारा। उन सैकड़ों श्लोकों का सार यह है – 'जो रामायण का श्रवण करता है–वह सब पापों से मुक्त हो अपनी इक्कीस पीढ़ियों के साथ श्रीरामचन्द्र जी के उस परमधाम में चला जाता है जहाँ जाकर मनुष्य को कभी शोक नहीं करना पड़ता।'

आर्य समाज और महर्षि दयानन्द रामायण श्रवण के ऐसे महात्य को नहीं स्वीकारते यह पृथक बात है, **परन्तु रामायण महाभारत को काल्पनिक मानते है यह बात तथ्य से परे हैं।** महर्षि दयानंद रामायण, महाभारत को क्रमशः श्री राम और श्री कृष्ण का इतिहास मानते हैं तथा इसके पात्रों को भी मान्यता देते है इसके प्रमाण सत्यार्थ प्रकाश और उपदेश मंजरी (महर्षि के पूना प्रवचन) में मिलते हैं।

1. महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में उन ग्रन्थों का उल्लेख किया है जिन्हें पढ़ना चाहिए अथवा नहीं। इनमें पठन योग्य ग्रन्थों में वाल्मीकी रामायण के साथ महाभारत और विदुरनीति आदि की गणना की गयी हैं। देखिए–

तत्पश्चात मनुस्मृति, वाल्मीकी रामायण और महाभारत के उद्योगपर्वान्तर्गत विदुरनीति आदि अच्छे प्रकरण जिनमें दुष्ट व्यसन दूर हो और उत्तम सभ्यता प्राप्त हो, वैसे को काव्यरीति अर्थात पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य, विशेषण और भावार्थ को अध्यापक लोग जनावे और विद्यार्थी लोग जानते जायें। इनको एक वर्ष के भीतर पढ़ लें।

2. राजा जनक तथापंचशिख मुनि आदि रामायण के पात्र हैं। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के पाँचवें सम्मुल्लास में इनका उल्लेख किया हैं। इससे बड़ा क्या प्रमाण हो सकता है कि दयानन्द रामायण महाभारत और उनके पात्रों को काल्पनिक नही, वास्तविक उज्जवल इतिहास के रूप में स्वीकार करते हैं। देखिये –

परन्तु जो विशेष उपकार एकत्र रहने से होता हो तो रहे। जैसे जनक राजा के यहाँ चार चार महीने तक पंचशिखादि और अन्य सन्यासी कितने ही वर्षो तक निवास करते थे।

3. पुनः सत्यार्थ प्रकाश ही के छठे सम्मुल्लास में अन्य ग्रन्थों को पढ़ने की प्रेरणा देने के साथ विदुर प्रजागर तथा महाभारत को पढ़ने के महत्व का प्रतिपादन महर्षि निःसंकोच करते हैं। देखिए–

'यह संक्षेप से राजधर्म का वर्णन यहाँ किया गया हैं। विशेष वेद, मनुस्मृति के सप्तम अष्टम और नवम अध्याय, शुक्रनीति, विदुरप्रजागर और महाभारत शान्तिपर्व के राजधर्म और आपद्धर्म आदि पुस्तकों में देखकर पूर्ण राजनीति को धारण कर माण्डलिक अथवा सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य करें।'

4. पुनः सातवें सम्मुल्लास में श्रीकृष्ण के बारे में क्या लिखते है वह द्रष्टव्य है (यद्यपि यहाँ उन्होंने अवतारवाद का निषेध किया है)

'श्रीकृष्ण जी कहते है कि जब–जब धर्म का लोप होता है तब–तब मैं शरीर धारण करता हूँ।

उत्तर – यह बात वेदविरूद्ध होने से प्रमाण नहीं। और ऐसा हो सकता है कि **श्रीकृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मै युग–युग में जन्म लेके श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ तो कुछ दोष नहीं। क्योकिं 'परोपकाराय सतां विभूतयः'** परोपकार के लिए सत्पुरूषों का तन, मन, धन, होता है, तथापि इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।' अर्थात् महर्षि दयानन्द का मंतव्य है कि श्रीकृष्ण ऐतिहासिक है, आदर्श है, आप्त है, परन्तु अवतार नहीं हैं।

5. सत्यार्थ प्रकाश के 11 वें समुल्लास में महर्षि दयानन्द आर्यावर्त्त देश की अवनति के कारणों पर विचार करते हुए उसके चक्रवर्ती स्वरूप पर भी प्रकाश डालते है और उसमें युधिष्ठिर तथा महाभारत की चर्चा अनेक बार हैं।

देखिये –

'महाराजे युधिष्ठिरजी के राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्धपर्यन्त यहाँ के राज्याधीन सब राज्य थे। सुनो ! चीन का 'भगदत्त', अमेरिका का 'बब्रुवाहन', यूरोप के 'विडालाक्ष' अर्थात मार्जार के सदृश आँखवाले, 'यवन' जिसको यूनान कह आये और ईरान का 'शल्य' आदि सब राजा राजसूय–यज्ञ और महाभारत युद्ध मं आज्ञानुसार आये थे।'

6. **'जब रघुगण राजा थे, तब रावण भी यहाँ के आधीन था।** जब रामचन्द्र के समय में विरूद्ध हो गया, तो उसको रामचन्द्र जी ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया।' यहाँ रामायण के प्रमुख पात्रों का उल्लेख स्पष्ट हैं।

सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

7. स्वायंभुव राजा से लेकर पाण्डवपर्यन्त आर्यो का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गये। –सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

'इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि सृष्टि से लेकर महाभारतपर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं। जैसे यहाँ सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वद्ध्र्यश्व, अश्वपति, शशसविन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननयुक्त, शर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरूत्त और भरत, सार्वभौम सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम लिखे है, वैसे **स्वायम्भुवादि चक्रवर्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मृति, महाभारतादि ग्रन्थों में लिखे हैं। इसको मिथ्या करना अज्ञानी और पक्षपातियों का काम हैं।**'सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

अब तनिक विचार तो करिए कि आचार्य दयानन्द ने महाभारत आदि इतिहास को मिथ्या बताने वालों को अज्ञानी और पक्षपाती माना हैं। ऐसे महामानव के बारे में यह प्रचारित करना कि वे रामायण और महाभारत को नहीं मानते थे, पूर्णतः असत्य कथन हैं।

8. और भी देखिये आर्यावर्त के पतन के कारणों पर विचार करते ऋषि लिखते है – 'जब नाश होने का समय निकट आता है तब उलटी बुद्धि होकर उलटे काम करते हैं। कोई उनको सूधा समझावे तो उलटा मानें और उलटी समझावें उसको सूधी मानें। जब बड़े बड़े विद्वान्, राजे, महाराजे, ऋषि, महर्षि, लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये, तब विद्या का और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट होता चला।' सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

9. आर्यावर्त देश की हानि कब और कैसे हुयी उसके बारे में ऋषि आगे सार रूप में लिख देते है –

'इस बिगाड़ के मूल महाभारत युद्ध से पूर्व एक सहस्त्र वर्ष से प्रवृत्त हुए थे।'

सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

10. अब देखिये सत्यार्थ प्रकाश के दशवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द महाभारत के पात्रों का जिस प्रकार वर्णन करते है क्या उसे पढ़कर कोई भी विवेकशील व्यक्ति यह कह सकेगा कि दयानन्द महाभारत को काल्पनिक मानते थे ? आप भी देखिये–

'अर्थात एक समय में व्यासजी अपने पुत्र शुक्र और शिष्य सहित 'पाताल अर्थात् जिसको इस समय अमेरिका' कहते है, उसमें निवास करते थे।'

श्रीकृष्ण जी तथा अर्जुन पाताल में 'अश्वतरी' अर्थात् जिसको अग्नियान नौका कहते है, (उस पर) बैठ के पाताल में जाके महाराजा युधिष्ठिर के यज्ञ में उद्दालक ऋषि को ले आये थे। धृतराष्ट्र का विवाह 'गान्धार' जिसको 'कंधार' कहते हैं वहाँ की राजपुत्री से हुआ। माद्री जो कि पाण्डु की स्त्री थी 'ईरान' के राजा की कन्या थी और अर्जुन का विवाह पाताल में जिसको 'अमेरिका' कहते है वहाँ के राजा की लड़की उलोपी के साथ हुआ था। जो देशदेशान्तर, द्वीपद्वीपान्तर में न जाते होते, तो ये सब बाते क्यो कर हो सकती ? मनुस्मृति में जो समुद्र में जाने वाली नौका पर 'कर' लेना लिखा है, वह भी आर्यावर्त से द्वीपान्तर में जाने के कारण हैं। और जब महाराजा युधिष्ठिर ने राजसूय–यज्ञ किया था, उसमें सब भूगोल के राजाओं को बुलाने को निमन्त्रण देने के लिए भीम, अर्जुन, नकुल, और सहदेवचारों दिशाओं में गयेथे।'सत्यार्थप्रकाशदशम समुल्लास

11. महाभारत के युद्ध को आर्यावर्त के पतन के लिए उत्तरदायी मानते हुए महर्षि चेतावनी देते है–

क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पाँच सहस्त्र वर्ष के पहिले हुई थी, उनको भी भूल गये ? देखो! महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते पीते थे। आपस की फूट से कौरव, पाण्डव, और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा हैं। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यो को सब सुखो से

छुडाकर दुःखसागर में डुबा मारेगा ? **उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्रहत्यारे, स्वदेशविनाश, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं।** परमेश्वर कृपा करे कि वह यह महाराजरोग हम आर्यो में से नष्ट हो जाय।' सत्यार्थप्रकाश दशम समुल्लास

12. पूना में महर्षि दयानंद जी ने जो प्रवचन दिए थे उनमें से 14 उपदेश मंजरी के नाम से प्रकाशित हैं। उनमें दशवें प्रवचन के कुछ अंश देखें–

'रघु के पीछे राजा राम हुए इनका रावण से युद्ध हुआ, इनका इतिहास रामायण में वर्णन किया गया हैं।' कहिये स्वामी जी रामायण के बारे में महर्षि दयानन्द की मान्यता स्पष्ट हुयी अथवा नहीं ?

आगेमहाभारत के बारे में भी देखें–

'राजा शांतनु को ऐश्वर्य का बड़ा भारी अभिमान उत्पन्न हुआ और देश में व्यभिचार बढ़ गया। निष्कंटक राज्य होने के कारण शांतनु और भी विशेष अभिमानसंयुक्त हुआ। .... इसके अनन्तर शांतनु विषयों में अत्यन्त आसक्त हो गया। सत्यवती के प्रति इसकी चालाकी का समाचार आप सब लोग जानते है, परन्तु शांतनु राजा होकर भी सत्यवती के पिता पर बल प्रयोग न कर सका । सत्यवती के पिता ने उनको डाँटा था। जब तक भीष्म ने अपना कुल हक सत्यवती के पुत्रों को देने का निश्चय नहीं किया तब तक सत्यवती के दरिद्र पिता ने राजा का कहना स्वीकार नहीं किया। इससे ही प्रकट हो सकता है कि प्राचीन आर्य मनुष्यों में कितनी स्वाधीनता थी और राजा लोग भी सामाजिक प्रबन्ध में किस प्रकार प्रबन्धकर्ता हुए थे। इस आर्यावर्त के राजाओं की नेकी वा नेकनामी संसार में फैल रही थी। योरूप और अमेरिका के कुछ राजा लोग इनकी सेवकाई में तत्पर हो, कर देते थे। अब सोचिये कि वर्तमान में देश की दशा कितनी गिर गई है। ये सब बातें महाभारत के राजसूय और अश्वमेध पर्वो में वर्णित हैं।'

13. श्रीराम और रामायण के बारे में सत्यार्थ प्रकाश के 11 वे समुल्लास में लिखा है –

प्रश्न. रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापन किया हैं। जो मूर्तिपूजा वेदविरूद्ध होती तो 'रामचन्द्र मूर्तिस्थापन क्यो करते' और वाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते ?

उत्तर– रामचन्द्र के समय में उस लिंग वा मन्दिर का नाम निशान भी नहीं था, किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्य राम राजा ने मन्दिर बनवा, लिंग का नाम 'रामेश्वर' धर दिया हैं। जब रामचन्द्र सीताजी को ले हनुमान आदि के साथ लंका से विमान पर बैठ आकाश मार्ग से अयोध्या को आते थे, तब सताजी से कहा है कि–

अत्र पूर्व महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।।

सेतुबन्ध इति ख्यातम्।। वाल्मीकि. लंका काण्ड (युद्धकाण्ड सर्ग 123 / श्लो.20–21

हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु व्यापक महान् देवों का देव 'महादेव' परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहाँ प्राप्त हुई। और देख! यह सेतु हमने बाँधकर लंका में आके, उस रावण को मार, तुझको ले आये। इसके सिवाय वहाँ वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा।' सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

अब पाठकगण देखें कि उपरोक्त अनेकानेक उदाहरणों से सूर्य के प्रकाश की भाँति स्पष्ट है कि महर्षि दयानंद जी निश्चित रूप से रामायण और महाभारत को प्रमाणिक मानते थे। हाँ! इनमें प्रक्षिप्त स्थलों की विद्यमानता को भी वे स्वीकारते थे।

यहाँ यह स्पष्टीकरण आवश्यक है कि रामायण तथा महाभारत में जो कुछ भी उपलब्ध है वह सब प्रमाणिक है ऐसा वे और आर्य समाज के विद्वान् नहीं मानते हैं।

प्रमाण देखें

'महर्षि दयानन्द राजा भोज के हवाले से लिखते है –

व्यासजी ने चार सहत्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पाँच सहस्त्र छः सौ श्लोकयुक्त अर्थात दश सहस्त्र श्लोको के प्रमाण 'भारत' बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्त्र, महाराजा का भोज कहते है कि मेरे पिता के समय में पच्चींस और मेरी आधी उमर में तीस सहस्त्र श्लोकयुक्त 'महाभारत' का पुस्तक मिलता हैं। जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक एक ऊँट का बोझा हो जायगा और ऋषि–मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बनावेगे तो आर्यावर्त्तीय लोग भ्रमजाल में पड़के वैदिक धर्म विहीन होकर भ्रष्ट हो जायेगे–सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 11

अन्त में महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण जी के चरित्र के ऊपर पुराणों द्वारा कलंक लगाया है उसका निवारण करते हुए जो लिखते हैं वह पढ़ने योग्य हैं –

देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम हैं। उनका गुण, कर्म, स्वभाव, चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश हैं। जिसमें कोई अधर्म का आचरण बुरा काम श्रीकृष्ण ने जन्म से मरणपर्यन्त किया हो ऐसा नहीं लिखा। सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 11

अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल उदयपुर

चलभाष –08005808458, 09394235101

सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्

जब–जब बड़ों की सीख हमने नहीं मानी।
तब–तब सदा उठाना पड़ी है हमें हानी।।
समय चक्र घूमकर उस बिन्दू के सामने आता है।
पूरा चक्र लगाने के पूर्व जहां से वह जाता है।।
इतिहास भूलों से बिखरता, और सजगता से संवरता है।
इसे मापदण्ड मानकर चलते जो उन्हें धोखा नहीं होता है।।
इसलिए स्वर्णिम इतिहास हो, या सुलझे विचार।
दोनों को ही बनाएं सीख का आधार।।
बड़े बूढ़े ऋषि–मुनियों ने हमें यही समझाया।
नहीं दूजा वेद ज्ञान सा, जग में, यह बतलाया।।
क्योंकि वेद सनातन है, पूर्ण और है पवित्र।
ज्ञान भी उसका फैला है यत्र–तत्र–सर्वत्र।।
अमृत कलश से भरा है यह वेद ज्ञान।
योगेश्वर कृष्ण और मानते थे श्रीराम।।
पर, हमने जीने का ढ़ंग कुछ और अपनाया है।
प्राचीन संस्कृति और सीख को जिसमें भुलाया है।।
भौतिक सुख–शान्ति के वातावरण में।
आधार शून्य बाहरी आवरण में।।
जिसे नवीनता की निशानी मान रहे।
मानो अमृत छोड़ गरल पान पा रहे।।
आज मनुष्यता बिखरते जा रही।
दुनियां सिमिटती जा रही।।
पर हम हैं कि पाश्चात्य और पशु सभ्यता में ही लिप्त हैं।
बाहरी सुखों से ही बस तृप्त हैं।।
परन्तु, अज्ञान से भरी ये मानसिकता दुःख की है निशानी ।
दुःख भोगना होगा, यदि कीमत अतीत की नही जानी ।।
इसलिए अभी भी वक्त है संभल जाओ।
अतीत और वर्तमान में दूरी न बढ़ाओ।।
जब–जब बड़ों की सीख हमने नहीं मानी।
तब–तब सदा उठाना पड़ी है हमें हानी।।
इसीलिए धर्म शास्त्र प्रणेता मनु ने समझाया।
"सर्वपितृ मनुष्याणा वेदाश्चक्षु सनातनम्" बतलाया।।

– प्रकाश आर्य, महू

बोधकथा

सकारात्मक दृष्टिकोण से देखो

"व्यक्ति को नकारात्मक नहीं सकारात्मक सोचना चाहिए, क्योंकि नकारात्मक सोच नकामयाबी की ओर, नाकामयाबी निराशा की ओर तथा निराशा का परिणाम मूर्खता होता है।"

– लेखक

एक कस्बे में एक धनवान सेठ रहा करते थे। उनके दो नन्हें पुत्र थे। एक दिन उस सेठ ने अपने एक खास नौकर को बुलाकर कहा – तुम मेरे दोनों बेटों को गरीब बस्ती में ले जाओ, ताकि मेरे लाड़ले यह देख सके कि गरीबी क्या चीज होती है।

वह नौकर सेठ के दोनों बेटों को गरीब बस्ती में ले गया और वहां सारा दिन बिताने के बाद वापस घर ले आया।

दूसरे दिन उस सेठ ने अपने दोनों बेटों को पास बुलाया और पहले पुत्र से पूछा – बेटा कैसा लगा, उस गरीब बस्ती में समय बिताकर।

पहले लड़के ने जवाब दिया – पिता जी ! गरीबी भयानक होती है। उनके घरों में ना गार्डन है, न तो अच्छा कुत्ता है, उनके घर में स्वीमिंग पुल भी नहीं है। हम लोग वहां होते तो भूख और कष्ट से मर जाते। मैं तो वहां दुबारा नहीं जा सकता।

फिर उस सेठ ने अपने दूसरे बेटे से वही प्रश्न पूछा। तो दूसरे ने कहा – पिताजी, ऐसा जीवन दिखाने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। हम लोगों के पास केवल एक ही कुत्ता है, जबकि उनके पास कई हैं। हमारे घर में तो एक छोटा सा स्वीमिंग पुल ही है, जबकि उनके घर के पीछे तो पूरी नदी बहती है। हमारे घर के अन्दर छोटा सा गार्डन ही है, जबकि उनका घर प्राकृतिक गार्डन अर्थात जंगल के बीच में स्वर्ग प्रतीत होता है। वाकई पिताजी, उन लोगों को प्रकृति की अपार सम्पदा मिली है, उस जीवन का अपना ही मजा है। वहां कोई बन्धन नहीं है।

तो क्या तुम्हें अपना घर, रहन–सहन पसन्द नहीं ?

ऐसा नहीं पिताजी, यह बन्धनमुक्त जीवन स्नेह से लबालब है। इसमें अलग ही आनन्द है।

इस कहानी से सीख मिलती है कि, हमें नकारात्मक नहीं सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए। एक ही चीज को देखने के अलग–अलग तरीके हो सकते हैं, परन्तु हमें हमेशा स्वस्थ और अच्छी दृष्टि से देखना चाहिए।

एक बार सुकरात से एक निराशावादी व्यक्ति मिला और बोला – मैं जिन्दगी से ऊब गया हूं, आत्म हत्या करने का मन करता है। सुकरात का उत्तर था – तेरा मर जाना ही उत्तम है, तू जितनी जल्दी मरे, उतना सबके लिए, तेरे लिए अच्छा होगा, अन्यथा तेरी इस विचारधारा से समाज को बड़ी क्षति होगी।

एक विचार– निराशावादी दृष्टिकोण आपके पुरूषार्थ और उत्साह को कमजोर करता है। आशावादी सकारात्मक दृष्टिकोण आपकी कार्यक्षमता और उत्साह की वृद्धि करता है। गुरूदेव दयानन्द का जीवन हमारे लिए एक ऐसी ही प्रेरणा देता है, जिसमें प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूल बना दिया। एक शायर ने लिखा–

"आदमी वो नहीं जिसे गर्दिशें हैरान कर दें, आदमी वह है जो गर्दिशें विरान कर दे।

समाचार...

आर्य समाज नीमच द्वारा वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया

आर्य समाज में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 26 से 31 अगस्त 2024 6 दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें प्रातः व सायंकाल दो सत्रों में आर्य परिवारों में व सार्वजनिक स्थानों पर कुल 11 कार्यक्रम आयोजित हुए। जिसमे आर्य विदुषी आचार्या डॉ. प्रियंका आर्य भुसावर का यज्ञ व वेद मंत्रों के साथ भजोपदेशक के माध्यम से परिवार, समाज, धर्म के विषयों पर ओजस्वी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

रतलाम संभाग के धामनोद में हुआ वेद प्रचार सम्पन्न

25 यज्ञ वेदियों में 74 यज्ञमान दम्पत्तियों के द्वारा हुई चतुर्वेदिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति। आर्य समाज धामनोद व सैलाना के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित चार दिवसीय वेद कथा के कार्यक्रम में वैदिक प्रवक्ता के रूप में नर्मदापुरम् से पधारें वैदिक विद्धान आचार्य आनंद जी पुरूषार्थी जी ने वेदकथा कार्यक्रम व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष आहुतियों के साथ 74 यज्ञमानों का सामुहिक यज्ञ सम्पन्न करवाया व उपदेश में कहां कि प्रत्येक गृहस्थी को प्रतिदिन संध्या यज्ञ व स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

साथ ही बताया की श्रीकृष्ण प्रतिदिन यज्ञ करने वाले, वेदों के विद्वान, महापराक्रमी, नीतिवान,दुष्टो के दंड दाता सज्जनों के रक्षक थे उन्हे माखन चोर, रास–रचैया गोपियों के कपड़े चुराना ऐसे झुठे लांछन लगाकर उन्हें बदनाम नहीं करना चाहिए। कार्यक्रम में बिजनौर से पधारे सुविख्यात भजनोपदेशक मान्यवर पंडित भीष्म जी ने भी भजनों के माध्यम से बताया कि होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से जल्दी प्रसन्न होते है भगवान यज्ञ से जो व्यक्ति सुख, धन, ऐश्वर्य चाहता है तो वह प्रतिदिन अपने घर में यज्ञ करना शुरू कर दे। कथा के अंतिम दिन सैलाना, रतलाम, खाचरोद, नागदा सहित आसपास के कई श्रद्धालुओं ने इस वेद कथा के आयोजन में अपनी उपस्थित होकर पुण्य लाभ लिया।

आर्य समाज चैन्नई द्वारा पाण्डूचेरी में अभिनव योजना का उद्घाटन

दिनांक 14 व 15 सितम्बर 2024 को पाण्डूचेरी में वैदिक विद्या केन्द्र के नवनिर्मित अत्यन्त भव्य, विशाल भवन का उदघाटन किया गया। इसके माध्यम से, अनेक प्रकल्प वैदिक सैद्धान्तिक व्यवस्था के अनुरूप जिसमें ब्रह्मचारी शिक्षण व्यवस्था, कौशल शिक्षा, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम, साधना स्थल, विशेष उच्च पढ़ाई हेतु रहवासी भोजन व्यवस्था आदि हैं। बहुत शीघ्रता में इस प्रकल्प को मूर्तरूप देने का कार्य मात्र 27 माह में किया गया। भव्य अति सुन्दर व्यवस्था युक्त विशाल भवन निर्माण और योजना को देखते हुए यह अकल्पनीय लगता हैं। इस हेतु समस्त कार्यकारिणी अत्यन्त साधुवाद की पात्र हैं।

आर्य युवा आत्मनिर्भर योजना

मुख्य बिन्दु

1. कौशल प्रशिक्षण की अवधि 12 महीने (1 अगस्त 2024 से 31 जुलाई 2025)
2. साथ में वैदिक प्रचारक बनने का प्रशिक्षण।
3. आयु सीमा 18 से 25 वर्ष के अविवाहित आर्य युवक–युवतियाँ।
4. नवनिर्मित वैदिक विद्या केन्द्र, पुदुचेरीं में निःशुल्क आवासीय और भोजन व्यवस्था।
5. NSDC भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सर्टिफिकेट।
6. प्रशिक्षण की समाप्ति पर आत्मनिर्भर होने का योग्यतानुसार अवसर।
7. शैक्षणिक योग्यता 10 वीं 12 वीं तक।

संस्था का परिचय :

आर्य समाज चैन्नई के अंतर्गत DAV स्कूल चैन्नई चल रहा हैं। वर्तमान में DAV ग्रुप के स्कूलों में लगभग 40 हजार छात्र–छात्राएं पढ़ रहे हैं। इसके अंतर्गत, DAV कौशल केंन्द्र के द्वारा युवक–युवतियों में कौशल का विकास कर उनको आत्मनिर्भर बनाने का प्रकल्प हैं।

वैदिक विद्या केंन्द्र पुदुच्चेरी

वैदिक विद्या केंन्द्र, पुदुच्चेरी में स्थित हैं। इसका उद्धेश्य समाज के हर वर्ग में वैदिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना हैं। यहाँ हर तरह की आवासीय और शिक्षण व्यवस्था उपलब्ध हैं। यहाँ बच्चों और युवाओं का गुरूकुल एवं वानप्रस्थियों के लिए आश्रम चालू हो रहा हैं। इसका निर्माण आर्य समाज और DAV स्कूल चैन्नई के द्वारा करवाया गया हैं।

प्रचारक बनने का प्रशिक्षण

1. मूल वैदिक सिद्धांतो की स्पष्टता एवं अन्य धर्म अथवा मतों से तुलनात्मक अध्ययन।
2. संस्कारों को करने और समझाने की योग्यता।
3. मंच से वक्तव्य देने का अभ्यास।
4. भजन उपदेशक–उपदेशिका का प्रशिक्षण (रूचि एवं योग्यतानुसार)।
5. प्रचार के आधुनिक साधनों जैसे–की मल्टीमीडिया इत्यादि का उपयोग।
6. कैमरा के समक्ष बोलने का प्रशिक्षण और अभ्यास।
7. विभिन्न तरह की प्रचार सामग्री (फिल्म, एप, पुस्तके इत्यादि)
8. सोशल मीडिया में प्रचार का प्रशिक्षण।
9. अंग्रेजी भाषा की योग्यतानुसार प्रशिक्षण इत्यादि।

योजना का आर्थिक पक्ष

1. यह योजना पूर्ण रूप से निःशुल्क हैं। परन्तु भाग लेने वाले हर प्रतिभागी को 20 हजार रूपए बतौर सुरक्षा राशि जमा करने होगें।

2. यह प्रशिक्षण करने पर सुरक्षा राशि प्रतिभागी को लौटा दिया जाएगा।
3. हर एक प्रतिभागी से अपेक्षा है कि वे अपनी योग्यतानुसार संस्था में निःशुल्क सेवा कार्य करेगें।
4. अगर प्रतिभागी की आर्थिक स्थिति सुरक्षा राशि देने की नहीं है तो विशेष आवेदन देने पर छूट दी जा सकती हैं।

विभिन्न कौशल प्रोग्राम की सूची

स्कूटर मोटरसाइकिल, कार, टी.वी., फ्रीज, एसी, वेब ग्राफिक्स, मोबाइल, इलेक्ट्रिक, नर्सिंग ट्रेनिंग, सिलाई प्रशिक्षण, कम्प्युटर, सी.सी.टी.वी. कैमरा, आदि। ये प्रारम्भिक कोर्स हैं। आने वाले दिनों में अन्य कोर्स को जोड़ने की सम्भावना हैं।

इस योजना में निम्न लोगों को प्राथमिकता दी जाएगी –

1. वैदिक शिक्षा संस्थानों से पढ़े विद्यार्थी।
2. आर्य वीर–वीरांगना दल के सदस्य।
3. वैदिक आचार्यों, प्रचारको, पुरोहितों और आर्य समाज के सदस्यों के परिजन।
4. कोई भी युवक–युवती जो उपयुक्त किसी भी श्रेणी में न हो, पर वैदिक धर्म के प्रति कटिबद्ध हो, वे भी आवेदन कर सकते हैं।

उच्च स्तर की पढाई कर रहे आर्य–युवतियों के लिए विशेष निमंत्रण :

1. अगर आप कोई भी डिस्टेंस/ऑनलाइन पढ़ाई, एवं किसी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। तो आप के सात्विक वातावरण में एकाग्रता से अपनी पढ़ाई/तैयारी कर सकते हैं।
2. आवास, भोजन, व्यायाम और इंटरनेट इत्यादि की उत्तम व्यवस्था उपलब्ध हैं।
3. आवास, भोजन इत्यादि का मासिक शुल्क 8000 हजार रूपया हैं।
4. संस्था में सेवा कार्य देने पर अथवा विशेष आवेदन देने पर इसमें छूट दी जा सकती हैं।

Swami Vivekananda Rural Community College (SVRCC)

SVRCC वर्ष 2007 से 5,000 युवकों को विभिन्न कौशल में प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर बना चुका हैं। यह NSDC द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था है इसके द्वारा प्रदत प्रमाण पत्र की मान्यता पूरे देश भर में हैं। यह विभिन्न कौशल के लिए आवश्यक प्रयोगशालाओं से सम्पन्न संस्था हैं।

सम्पर्क करें –

मोबाइल नम्बर : श्रीमती वृतिका आर्य – 9445667126
डॉ. हर्षवर्धन आर्य– 9850042548 आर्य विनीत शर्मा – 8013856193
Email ID : kaushal.kendram@davchennai.org
Address : RS No 28 Maathur Road, Behind PIMS Hospital, Ganapathychettikulam Puducherry.

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि द्वारा निमाड़ अंचल में वेद प्रचार

1. दिनांक 15 से 16 सितम्बर 24 को आर्य समाज सनावद द्वारा वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें प्रातः यज्ञ, भजन, एवं प्रवचन का आयोजन किया गया जिसमें मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिध सभा के उपदेशक आचार्य विश्वामित्र जी द्वारा प्रवचन एवं श्री दिलीप जी आर्य द्वारा भजन सुनाये गए।
2. दिनांक 17 सितम्बर 24 को रात्रिकालिन सत्र ग्राम बेडिया जिला खण्डवा मे आचार्य विश्वामित्र जी द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन श्री दिलीप जी आर्य द्वारा भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
3. दिनांक 18 सितम्बर प्रातः काल ग्राम बावडिया जिला खण्डवा मे एवं रात्रिकालिन कार्यक्रम ग्राम गुजली में आचार्य विश्वामित्र जी द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन श्री दिलीप जी आर्य द्वारा भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
4. दिनांक 19 सितम्बर 24 को ग्राम मोखन गांव जिला खरगौन मे आचार्य विश्वामित्र जी द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन श्री दिलीप जी आर्य द्वारा भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
5. दिनांक 20 सितम्बर 24 ग्राम मुल्ठान जिला खरगौन मे आचार्य विश्वामित्र जी द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन श्री दिलीप जी आर्य द्वारा भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
   1. दिनांक 21 सितम्बर 24 ग्राम हिरापुर जिला खरगौन मे आचार्य विश्वामित्र जी द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन श्री दिलीप जी आर्य द्वारा भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
   2. दिनांक 22 सितम्बर 24 ग्राम नान्दरा जिला खरगौन मे आचार्य विश्वामित्र जी द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन श्री दिलीप जी आर्य द्वारा भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दु:खद समाचार

आर्य समाज मोहनपुरा, गोरमी जिला भिण्ड तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के पूर्व सदस्य और ऋषिवर देव दयानंद सरस्वती के अन्यय भक्त स्व. वानप्रस्थी सुदामा लाल शर्मा मुनि जी के पुत्र श्री वेदप्रकाश शर्मा के पुत्र डॉ. हिमाशु शर्मा (भारतीय सेना में डॉक्टर) का कल पठानकोट में सड़क दुर्घटना में निधन हो गया हैं। जिनका दिनांक 25/09/24 को ग्वालियर में प्रातः 8 बजे भारतीय सेना के सम्मान के साथ श्मशान घाट मुरार में वैदिक विधि से अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ।

दिवंगत आत्मा की सद्‌गति हेतु
प्रांतीय सभा परमात्मा से प्रार्थना करती है

विनम्र आग्रह

कृपया गुरुकुल की अन्नपूर्णा योजना के सदस्य बनें

परमात्मा की कृपा से सत्य सनातन धर्म की शिक्षा के प्रचार प्रसार का एक केन्द्र महर्षि दयानन्द कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया भी हैं। वर्तमान सत्र में लगभग 80 से 85 कन्यायें शिक्षा प्राप्त करेगी। गुरूकुल में कन्याओं की स्थायी भोजन व्यवस्था के लिए एक योजना चल रही हैं । इस योजना हेतु रूपये 11000/– की राशि एक बार दान स्वरूप भेंट की जाती हैं। दानदाता की यह राशि बैंक में उनके नाम से स्थायी जमा (फिक्स डिपाजिट) करदी जाती हैं। ऐसी जमा राशि के ब्याज से कन्याओं के भोजन की व्यवस्था हो यह प्रयास हैं। अभी 200 से अधिक दानी महानुभावों ने अपना सात्विक योगदान प्रदान कर दिया हैं।

धर्मप्रेमी महानुभावों, माताओं बहनों से अनुरोध है कृपया आप भी इस पवित्र कार्य में सहयोगी बनें।

विशेष–गुरूकुल को देय राशि आयकर विभाग से कर मुक्त सुविधा प्राप्त हैं।

यदि राशि सीधे बैंक में जमा करवावें तो हमें निम्नलिखित नंबरो पर सूचित करें या गुरुकुल का बारकोड स्केन कर सीधे ऑनलाईन राशि बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर हमें अवश्य सूचित करें।

बारकोड

कृपया इन नंबरो पर सूचित करें।

98266 55117
62611 86451
78289 66977
98936 05244

सभी दानदाता सहयोगीयों को गुरूकुल परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद

सात्विक दान

श्री गोपाल जी पाटीदार, खजराना इन्दौर की ओर से महर्षि दयानंद कन्या गुरुकुल को 250000/- रुपए की राशि दान स्वरुप एवं 85 बेडशीट प्रदान की गई गुरुकुल परिवार आपको धन्यवाद ज्ञापित करता है।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-25

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, प्रकाश आर्य द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - अतुल वर्मा, भोपाल

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062